शेख़ फ़रीद – सबद ५१

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥४७॥

सार: शरीर ही 'अहं' का अमरता पर सबसे मज़बूत दावा बनता है। हम उसे सुरक्षित रखने और स्थायी बनाने की कोशिश करते हैं, इस उम्मीद में कि यह नश्वरता को चुनौती दे सकता है। जब यह संरक्षण ही जीवन का उद्देश्य बन जाता है, तब जीवन केवल 'रखरखाव' व देखभाल तक ही सीमित रह जाता है और भय उसका छिपा हुआ स्वामी बन जाता है। शरीर की देखभाल करना ज़रूरी है पर उसे अपनी अंतिम पहचान मान लेना भ्रम है। इसके बजाय, शरीर का सम्मान एक 'पवित्र पात्र' के रूप में करें, न कि ऐसी पहचान के रूप में जिसे हमेशा के लिए बचाकर रखना हो। ज़िंदगी का सार बदलाव का विरोध करने में नहीं बल्कि जैसे-जैसे वह सामने खुलता है, उसे अपनाने में है।

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥
फ़रीद कहते हैं कि पैबंद लगे कोट में तो कई टांके होते हैं लेकिन जीवन-शक्ति को भीतर बांधे रखने के लिए कोई टांका नहीं होता। यह सशक्त स्मरण है कि बाहरी दिखावे, चाहे वह कितने भी बारीकी से क्यों न गढ़े गए हों, किसी व्यक्ति के आंतरिक स्वरूप की असलियत की जगह नहीं ले सकते।

वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥४७॥
हर कोई अपने तय समय पर इस दुनिया से चला जाता है फिर चाहे वह पूजनीय धार्मिक गुरु हों या आध्यात्मिक मार्गदर्शक। यह प्रकृति के नियमों में निहित समानता को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि कोई भी सामाजिक दर्जा या आध्यात्मिक पद किसी को भी इस अटल मृत्यु से छूट नहीं दिला सकता। (४७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद गहन सत्य पर प्रकाश डालते हैं कि केवल बाहरी परिवर्तन, जैसे विनम्र भाषा, शांत स्वभाव या स्वच्छ आदतों से, आंतरिक संघर्षों को समाप्त नहीं कर सकते हैं। भ्रमित मन, जो भीतर से विभाजित और प्रतिक्रियाशील बना रहता है किंतु बाहर से शांत और संयमित प्रतीत होता है। प्रामाणिकता बनाने के लिए हमें वास्तव में भीतर और बाहर को एक समान ही बनाना होगा, ऐसा अखंड आंतरिक स्वरूप जिसमें स्थिर पूर्णता हो और जिसे किसी भी प्रकार के दिखावे की आवश्यकता न हो।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com